International Journal of Professional Development
Vol.10,No.1, Jan-June2021 ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online)
Impact Factor: 3.017(IFSIJ)

सतत विकास: विकास की एक प्रक्रिया

डॉ० विमलेश यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
एम०एम०एच० पी.जी. कॉलेज गाजियाबाद

सार(Abstract)

*सतत विकास अंग्रेजी के शब्द "**Sustainable Development**" का हिंदी रूपांतरण है जो दो शब्दों से मिलकर बना है **Sustainable+Development** **Sustain** का अर्थ है "संभालना या स्थिरता", **Development** का अर्थ है "विकास या जीवन की गुणवत्ता में सुधार"| इस प्रकार सतत विकास से तात्पर्य पोषणीय विकास या टिकाऊ विकास से है जिसका मतलब विकास ऐसा होना चाहिए जो ना केवल मानव विकास की तत्कालीन आवश्यकताओं को पूरा करें| वरन स्थाई तौर पर भविष्य के लिए सतत विकास का आधार प्रस्तुत करें| यह विकास के लिए एक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है जो गरीबी पर्यावरण समानता लोकतंत्र विकास जैसे बुनियादी मानवीय सरोकारों से संबंधित है|*

सतत विकास शब्द की अवधारणा सर्वप्रथम 1987 में "**World Commission on Environment and Development**" ने अपनी "**our common future**" नामक रिपोर्ट में दी और इस बात पर बल दिया कि आर्थिक विकास हेतु कोई ऐसी पद्धति बनाई जाये जिससे भावी पीढ़ियों के विकास के आधार पर कोई आंच ना आए| इस रिपोर्ट में, जिसका शीर्षक "हमारा साझा भविष्य" था ने सतत विकास की सर्वाधिक व्यापक रूप से स्वीकार्य परिभाषा दी जो इस प्रकार है-" विकास जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है"|

विकास की यह प्रक्रिया ग्रीन हाउस गैसों को कम करने, ग्लोबल वार्मिंग को कम करने और पर्यावरण संसाधनों को संरक्षित करने का प्रयास करता है तथा यह प्राकृतिक, बायोडिग्रेडेबल निर्माण सामग्री के उपयोग एवं सौर व पवन ऊर्जा स्रोतों पर जोर देता है| सतत विकास की यह प्रक्रिया दुनिया के संसाधनों की रक्षा के रूप में विकसित हो रही है विकास के इस रूप का सार मानव गतिविधियोंऔर प्राकृतिक दुनिया के बीच एक स्थिर संबंध है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन की गुणवत्ता का आनंद लेने की संभावना को काम नहीं करता है इस प्रकाश सतत विकास में प्राकृतिक संसाधनों की अधिक खपत से बचने के साथ-साथ आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक मुद्दों के संयुक्त रूप से संबोधित करके एक स्वस्थ समुदाय को विकसित के लिए एक दीर्घकालीन, एकीकृत दृष्टिकोण निहित है|इस पोषणीय एवं सतत विकास की मान्यता है कि पारिस्थितिकी तंत्र पूर्वजों से प्राप्त हुई विरासत न होकर भावी संततियो की धरोहर है|

कुटशब्द- सतत, संपोषणीय, पारितन्त्र, साझा, पारिस्थितिकी, पोषक चक्र, अंतरपीढ़ीगत,दोहन|

प्रस्तावना- वर्तमान युग वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी उन्नति का है जिसमें उनका जीवन अधिकाधिक आरामदायक हो गया है आज व्यक्ति तकनीक, खनिज पदार्थों और ऊर्जा संसाधनों के बगैर जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता यह जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर गया चाहे वह कृषि, उद्योग, यातायात संचार और घरेलू हो| आज की स्थिति में हमारी पारिस्थितिकी खतरे में है यदि हम इसी तरह विकास करते रहे तो आने वाले 100 वर्षों में अधिकतर खनिज और संसाधन समाप्त हो जाएंगे इसने पारिस्थितिकी मंडल के चारों घटको (जलवायुविक तंत्र, जल चक्र, पोषक चक्र जैव विविधता) को भी खतरे में डाल दिया है| मानवीय लापरवाही और स्वार्थ के कारण ये प्राकृतिक संसाधन इस सीमा तक खराब हो गए हैं कि इनका नवीनीकरण बहुत कठिन है यह विकास पर प्रश्नचिन्ह लगा देता है इसका अर्थ है कि विश्व समुदाय को आगे विकास पर पूर्ण विराम लगा देना चाहिए परंतु यह बिल्कुल संभव नहीं है यह बात पूरे विश्व को परेशान किए हैं इस समस्या का हल निकालने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने नार्वे के तत्कालीन प्रधानमंत्री 'ग्रो हरलेम बुटलेंड' की अध्यक्षता में 1987 में समिति गठित की| इस कमीशन को 'संयुक्त शब्द पर्यावरण और विकास आयोग (यू एन सी ई डी) के नाम से जाना गया| आयोग द्वारा तैयार रिपोर्ट का शीर्षक था "हमारा साझा भविष्य"| सभी ने अनुभव किया कि पारिस्थितिकी अर्थशास्त्र और तकनीक में संतुलन होना चाहिए

www.ijpd.co.in

इसलिए बुटलेंड आयोग ने सतत पोषणीय विकास को इस तरह परिभाषित किया-

"भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता से बिना समझौता किए वर्तमान पीढ़ी को आवश्यकताओ की पूर्ति"|

सतत विकास का अर्थ- सतत विकास अंग्रेजी के शब्द "**Sustainable Development**" का हिंदी रूपांतरण है जो दो शब्दों से मिलकर बना है **Sustainable+Development|** **Sustain** का अर्थ है "संभालना या स्थिरता", **Development** का अर्थ है "विकास या जीवन की गुणवत्ता में सुधार"| सतत विकास की संकल्पना विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग (बुटलेंड आयोग 1987) द्वारा विकसित की गई रिपोर्ट के अनुसार," यह एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओ को भावी पीढ़ी की आवश्यकताओ से समझौता किए बिना पूरा किया जाता है सतत विकास का तात्पर्य आर्थिक विकास को सुरक्षित करना है इसका उद्देश्य वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधन सुरक्षित रखना है" इस प्रकार सतत विकास, विकास की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा पर्यावरण तथा प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचाए बगैर वर्तमान पीढ़ी तथा भावी पीढ़ी के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है इस

इस प्रक्रिया में सुनिश्चित किया जाता है कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ आने वाली पीढ़ी की आकांक्षाओं और जरूरतों को पूर्ण करने में परेशानी ना हो| परंतु इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि किस कीमत पर मनुष्य ने वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति की है इस प्रगति से हवा, पानी और भोजन तीनों प्रदूषित हुए हैं और हमारे प्राकृतिक संसाधनों का निर्दयता से शोषण हुआ है अगर यह है विकास की प्रक्रिया इसी प्रकार जारी रही तो फिर मानव स्वास्थ्य के स्वस्थ रहने का विचार करना व्यर्थ है|

21वीं सदी में सतत विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई और यह निर्णय लिया गया कि सम्मेलन में सभी देशों में पर्यावरण संबंधी हार्स को रोकने और इस प्रक्रिया को बदलने के लिए पर्यावरण के संबंध में ठोस और सतत विकास के लिए कार्य से संबंधित नीतियों और उपायों पर विचार किया जाएगा|

बुटलेंड प्रतिवेदन के अनुसार- "सतत विकास वह विकास है जो वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति आगे की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की बलि दिए बिना पूरी करता हो"|

सतत विकास की यह प्रक्रिया तभी सार्थक होती है जब इसमें मानव विकास पर्यावरण सुरक्षा एवं मानव स्वास्थ्य के बीच उचित संतुलन बना रहे| विकास ऐसा हो जो वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के विविधि व पहलुओं जैसे- पर्यावरण संतुलन, मानव स्वास्थ्य, संसाधनों का उचित रखरखाव व संरक्षण आदि को भी ध्यान में रखता हो सतत विकास की इस प्रक्रिया में जन सहभागिता की बेहद अहम भूमिका होती है कार्यक्रम नियोजन से लेकर क्रियान्वयन के प्रबंधन में ग्राम वासियों की सहभागिता को सतत विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण माना गया है स्थानीय व्यक्तियों द्वारा विभिन्न मौकों पर दिए गए निर्णयों को संघर्ष स्वीकार ना ही उनकी सच्ची सहभागिता प्राप्त करना है|

सतत विकास की इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है-

- सतत विकास की प्रक्रिया में मानव को मुख्य जगह दी है इसलिए सतत विकास में न केवल वर्तमान पीढ़ी बल्कि आने वाली व्यक्तियों के विकास का भी पूरा ख्याल रखा जाता है|
- सतत विकास का द्वितीय लक्ष्य मानव विकास पर जोर देना है गरीबी को कम करना, रोजगार के साधन उपलब्ध कराना, पर्यावरण के नवीन पहलुओं पर ध्यान देना एवं सामाजिक क्षेत्रों पर पूरा जोर दिया है जैसे- शिक्षा एवं स्वास्थ्य|
- इस प्रक्रिया तृतीय लक्ष्य पर्यावरण संरक्षण माना जाता है क्योंकि व्यक्ति के इर्द-गिर्द के वातावरण को ही पर्यावरण कहते हैं जिनके साथ व्यक्ति लगातार परस्पर क्रिया करता है पर्यावरण के अंतर्गत सभी भौतिक परिवेश तथा प्रभाव आते हैं अतः पर्यावरण संरक्षण की बहुत बड़ी आवश्यकता है अतः सतत विकास प्रकृति तथा वातावरण के संरक्षण के अनुकूल होता है|
- सतत विकास का चतुर्थ लक्ष्य पर्यावरण को संरक्षित करना ही नहीं बल्कि उसमें सुधारात्मक प्रयास भी किए जाते हैं विकास प्रक्रिया में वायु, जल एवं भूमि की गुणवत्ता को बनाए रखने का प्रयास किया जाता है तथा यह वर्तमान व भावी पीढ़ियों की सामूहिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं|

इस प्रकार सतत विकास का उद्देश्य सबके लिए समान न्याय संगत, सुरक्षित, शांतिपूर्ण एवं रहने योग्य विश्व का निर्माण करना एवं विकास के तीनों पहलुओं जैसे- सामाजिक समावेश, आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण को व्यापक रूप से समाविष्ट करना है|

भारतीयों के लिए पर्यावरण संरक्षण जो सतत विकास का अभिन्न अंग है कोई नई बात नहीं प्रकृति और वन्य जीवों का संरक्षण अपूर्व आस्था की बात है जो हमारे दैनिक जीवन में प्रतिबिंब होता है सतत विकास के इन लक्ष्यों का उद्देश्य विकास के अधूरे कार्य को पूरा करना और विश्व की संकल्पना को मूर्त रूप देना है जिसमें कम चुनौतियां और अधिक आशाएं हो| मानव पृथ्वी को माता मानता है और सतत विकास हमारी विचारधारा का मूल सिद्धांत रहा है धरती प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं को तो पूरा कर सकती है पर प्रत्येक व्यक्ति के लालच को नहीं| 2030

www.ijpd.co.in

के सतत विकास एजेंडे में निर्धनता को पूर्णता समाप्त करने का लक्ष्य न केवल नैतिक दायित्व है बल्कि शांतिपूर्ण, न्यायप्रिय और चिरस्थाई विश्व को सुनिश्चित करने के लिए जरूरी भी है|

सतत विकास के क्रम में अनेक कार्यक्रम जैसे-मेकइनइंडिया, स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना, स्किल इंडिया इसके अलावा अधिक बजट आवंटनो से बुनियादी सुविधाओं के विकास और गरीबी समाप्त करने से संबंधित कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया जा रहा है|

सतत विकास लक्ष्यों को विकसित नीतियों में शामिल करने के लिए हम अनेकों कार्य कर रहे हैं ताकि पर्यावरण और पृथ्वी के अनुकूल बेहतर जीवन जीने की मानवीय इच्छा को पूरा किया जा सके| पर्यावरण को संरक्षित रखते हुए संपूर्ण विकास हेतु लोगों की आकांक्षाएं पूरी करने के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य तथा स्थानीय स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति या संस्था द्वारा और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है|

सतत विकास लक्ष्य 17 वैश्विक लक्ष्यों का एक संग्रह है जिसे "सभी के लिए एक बेहतर और अधिक टिकाऊ भविष्य प्राप्त करने का खाका" बनने के लिए डिजाइन किया गया है संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों का उद्देश्य अगले 15 वर्षों में गरीबी और भुखमरी को समाप्त करना,लिंग समानता सुनिश्चित करना एवं सभी व्यक्तियों को समाज में सम्मानित जीवन का अवसर उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया है|

औद्योगीकरण की शुरुआत के पश्चात से दुनिया ने तीव्रता से तकनीकी प्रगति की है जिसमें विकास की गति, पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों के निर्माण की गति से बहुत आगे निकल रही है इसलिए आज के इस वैज्ञानिक दौर में सतत विकास का महत्व बढ़ रहा है|

सतत विकास के 17 वैश्विक लक्ष्यों के संग्रह को कुछ इस प्रकार समझाया गया है-

- सभी वर्ग को गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ सीखने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करना|
- सभी लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा उपलब्ध कराना एवं स्वास्थ्य जीवन यापन को बढ़ावा देना|
- समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता को दूर करना एवं महिलाओं को सशक्त बनाना|
- सभी के लिए पेयजल व स्वच्छ वातावरण का प्रबंधन करना
- आधुनिक ऊर्जा तक मानव की पहुंच सुनिश्चित करना
- विश्व से गरीबी को दूर करना
- बेहतर खाद पदार्थ एवं उपजाऊ कृषि को बढ़ावा देना
- रोजगार उपलब्ध कराने का भरसक प्रयास
- सतत औद्योगीकरण को बढ़ावा
- सुरक्षित मानव बस्तियों का निर्माण
- जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्यवाही करना
- उत्पादन पैटर्नो को सुनिश्चित करना
- समुद्री संसाधनों का संरक्षण और उपयोग को प्रोत्साहित करना
- जैव विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का भरसक प्रयास करना
- समावेशी समितियों का सभी स्तरों पर प्रभावी व जवाबदेह पूर्ण बनाना ताकि सभी के लिए न्याय सुनिश्चित हो सके
- सतत विकास के लिए कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत बनाना
- प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित बनाए रखना

सतत विकास के लिए ये 17 लक्ष्य 2030 एजेंडा के अंग है जिसे सितंबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के शिखर सम्मेलन में 193 सदस्य देशों ने अनुमोदित किया था|

सतत विकास के लिए सभी देशों का योगदान अपेक्षित है स्थायित्व आज प्रत्येक देश की चिंता है और सब देश मिलकर गरीबी और भूख को खत्म करने, स्वास्थ्य सुधार, आर्थिक विकास को समावेशी और पर्यावरण के अनुसार संवेदनशील बनाने का प्रयास करेंगे यह काफी उत्साह पूर्ण है|

जनसंख्या की तीव्रवृद्धि के कारण हमारे संसाधनों का अधिक दोहन किया जा रहा है जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो गई है यह सतत विकास इस बात पर जोर देता है कि प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के बचाव को ध्यान में रखकर प्राकृतिक संसाधनों की उत्पादन शक्ति को बनाए रखा जाए सतत विकास की इस अवधारणा में पर्यावरण के अनुकूल के साथ ही संसाधनों को भावी पीढ़ियों के लिए बचाए रखने पर बल दिया जाता है|

पहली बार सतत विकास शब्द का प्रयोग आईयूसीएन (इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचुरल कंपोजीशन) ने अपनी रिपोर्ट "विश्व संरक्षण रणनीति "में किया लेकिन शब्द की परिभाषा व कार्य पद्धति की व्याख्या 1987 ईस्वी में "वर्ल्ड कमिशन ऑन एनवायरनमेंट एंड डेवलपमेंट" ने our common future नामक रिपोर्ट में की| इस रिपोर्ट के अनुसार, "टिकाऊ विकास वह है जिसमें भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमताओं से समझौता किए बिना वर्तमान लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है"|

सतत टिकाऊ विकास की आवश्यकता को बेहतर ढंग से समझने की आवश्यकता मानव को है उसके लिए आर्थिक प्रगति तथा संपोषणीय हो सकती है जब पर्यावरण और विकास में बेहतर

संतुलन हो पर्यावरणीय संसाधनों के अति दोहन से भले ही कुछ समय के लिए समृद्धि दिख जाती हो किंतु दीर्घ काल में यह विनाश को ही बुलावा देता है इसी वजह से आज सतत विकास का मुद्दा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बना हुआ है।

सतत पोषणीय विकास समाज, पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था का संतुलित समीकरण है समाज में आर्थिक व औद्योगिक विकास इस तरह से होने चाहिए जिससे पर्यावरण को किसी भी प्रकार की ऐसी छति ना हो जिसकी भरपाई मानव द्वारा न की जा सके| यह बात दो तथ्यों को उजागर करती है- पहला, प्राकृतिक संसाधन न केवल हमारे जीविकोपार्जन के लिए जरूरी है बल्कि भविष्य की पीढ़ियों की जीविका का साधन भी है|दूसरा, वर्तमान कार्यों को करते समय भविष्य में आने वाले परिणामों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

सतत विकास के मुख्य चार मानक बनाए गए हैं-

अंतर पीढ़ीगत समता-का आधार निर्मित करने वाले तीन सिद्धांत है- **प्रथम**, प्रत्येक पीढ़ी को यह ध्यान में रखना चाहिए कि प्राकृतिक व सांस्कृतिक संसाधनों का संरक्षण इस तरीके से करे कि आगे आने वाली पीढ़ी के पास अपने तरीके से विकास करने का विकल्प हो न की पिछली पीढ़ी द्वारा उत्पन्न समस्याओं के समाधान मे हीं लगी रहे|**द्वितीय,** प्रत्येक पीढ़ी को गुणवत्ता का संरक्षण बनाए रखना चाहिए और पर्यावरण की गुणवत्ता बेहतर बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए|**तृतीय,** अधिशेष का संरक्षण प्रत्येक पीढ़ी को अपनी पिछली पीढ़ी से प्राप्त प्राकृतिक विरासत का अनुकूलतम उपयोग करने पर जोर देता है और बचे हुए संसाधनों को आगामी पीढ़ी के लिए संरक्षित करने की बात कहता है|

अंतरा पीढ़ीगत समता का सिद्धांत- घरेलू व वैश्विक दोनों स्तर पर वर्तमान पीढ़ी के मानव समुदायों के बीच संसाधनों का उपयोग पारदर्शी हो, को दृष्टिपाल करता है।

लैंगिक असमानता सिद्धांत- मानको के सिद्धांत मे असमानता पर आधारित समाज में महिलाओं और पुरुषों के बीच श्रम का विभाजन जिस तरीके से किया गया है उस तरीके से संसाधनों का विभाजन नहीं किया गया है इसलिए सभी समाजों में संसाधनों का वितरण पुरुषों व महिलाओं में समान रूप से हो।

प्रयुक्त क्षमता सिद्धांत- मानव का कर्तव्य है कि वह आगामी पीढ़ियों को एक साफ व सुचारू वातावरण प्रदान करें ताकि इस प्राकृतिक संपदा का उसकी प्रयुक्त होने की क्षमता से अधिक शोषण न हो और उसका संतुलन बना रहे|

अंततः सतत विकास को सफल बनाने हेतु कुछ रणनीतियों पर भी विचार करना होगा जिसके माध्यम से सतत विकास को संभव बनाया जा सकता है-

- उत्पादन प्रक्रिया के क्षेत्र में पारिस्थितिकी मित्रवत प्रौद्योगिकी को अपनाकर निर्वहनीय विकास को स्वीकार करना|
- स्थाई विकास के लिए जन सहभागिता को प्रोत्साहन देना।
- संसाधनों का प्रभावी संरक्षण करना।
- सभी देशों द्वारा पर्यावरण के संबंध में वैश्विक संस्थाओं संधियों को पूर्ण मान्यता दी जाए व उनका अनुपालन हो ।
- पर्यावरण विदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, गैर सरकारी संगठनों की सहायता से स्थाई विकास को प्रभावी बनाए।
- ऊर्जा के गैर पारस्परिक स्रोतों का उपयोग कर अपनी निर्भरता बढ़ाएं।
- खाद के रूप में रासायनिक उर्वरकों की जगह जैविक कंपोस्ट खाद का उपयोग करें।
- पर्यावरण हितैषी नवीन तकनीकों का प्रयोग।
- जनसंख्या वृद्धि को कम करके संसाधनों पर पड़ने वाले अधिक दबाव को कम किया जा सकता है।
- वन संसाधनो, जैव विविधता व पर्यावरणीय घटकों का संरक्षण किया जाए।

सभी देशों से सहयोग एवं अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए एक बेहतर शोषण व्यवस्था की आवश्यकता हो|

निष्कर्ष- सतत विकास वर्तमान की परम आवश्यकता है ताकि परितंत्र की उत्पादकता को बनाए रखा जा सके वास्तविकता यह है कि मानव जीवन का आधार परितंत्र एवं पर्यावरण ही है पर्यावरण को सतत बनाए रखने के लिए भारत जैसे विकासशील देश को उपयुक्त रणनीतियों पर बल देने की आवश्यकता है क्योंकि सतत व टिकाऊ विकास ही पर्यावरण को संतुलित व सुरक्षित रख सकता है ऐसा विकास ही मानव जीवन को सुखी व स्वस्थ बना सकता है निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि मानव समाज अपनी मान्यताओं में परिवर्तन करें एवं विश्व के सभी समुदायों द्वारा आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखें और समझे कि पृथ्वी पर संसाधन सीमित है सतत विकास के लिए सभी व्यक्तियों एवं समाजों की सबल भागीदारी ही सततता का सही मापन है|

संदर्भ ग्रंथ

1. संयुक्त राष्ट्र. (2015). अपनी दुनिया को बदलना: स्थायी विकास के लिए 2030 एजेंडा। रिट्रीव्ड फ्रॉम https://sustainabledevelopment.un.org/post2015/transformingourworld

2. साच्स, जे.डी. (2015). स्थायी विकास का युग। कोलंबिया विश्वविद्यालय प्रेस।
3. विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग। (1987). हमारा सामान्य भविष्य। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।
4. संयुक्त राष्ट्र. (1987). पर्यावरण और विकास आयोग की रिपोर्ट: हमारा सामान्य भविष्य। रिट्रीव्ड फ्रॉम https://sustainabledevelopment.un.org/content/documents/5987our-common-future.pdf
5. मीडोज, डी. एच., मीडोज, डी. एल., रैंडर्स, जे., एंड बेहरेंस III, डब्ल्यू. डब्ल्यू. (1972). विकास की सीमाएं; मानवजाति के पेशेवरों के लिए एक रिपोर्ट। यूनिवर्स बुक्स।
6. संयुक्त राष्ट्र. (1992). अजेंडा 21: रियो से संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम। रिट्रीव्ड फ्रॉम https://sustainabledevelopment.un.org/content/documents/Agenda21.pdf
7. United Nations. (1992). Agenda 21: The United Nations programme of action from Rio. Retrieved from https://sustainabledevelopment.un.org/content/documents/Agenda21.pdf
8. Rockström, J., Steffen, W., Noone, K., Persson, Å., Chapin, F. S., Lambin, E. F., Lenton, T. M., Scheffer, M., Folke, C., Schellnhuber, H. J., Nykvist, B., de Wit, C. A., Hughes, T., van der Leeuw, S., Rodhe, H., Sörlin, S., Snyder, P. K., Costanza, R., … Foley, J. A. (2009). A safe operating space for humanity. Nature, 461(7263), 472–475. https://doi.org/10.1038/461472a
9. World Bank. (2012). Inclusive green growth: The pathway to sustainable development. Retrieved from https://openknowledge.worldbank.org/handle/10986/6058
10. United Nations Development Programme. (2011). Human development report 2011: Sustainability and equity—A better future for all. Retrieved from http://hdr.undp.org/sites/default/files/reports/271/hdr_2011_en_complete.pdf
11. European Commission. (2010). Europe 2020: A strategy for smart, sustainable and inclusive growth. Retrieved from https://ec.europa.eu/europe2020/pdf/nd/europe2020_en.pdf

www.ijpd.co.in